



पटना। बिहार के मुख्यमंत्री नीतिश कुमार को 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.मीणा बहन एवं ब्र.कु.रूबी बहन।



अमरावती। विभागीय आयुक्त गणेश ठाकुर को 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.सीता बहन एवं ब्र.कु.बिंदू बहन।



वीकानेर। मूकबधिर विद्यालय में 'रक्षा-सूत्र' बांधने के पश्चात् समूह चित्र में हैं ब्र.कु.मीना बहन, ब्र.कु.रजनी बहन तथा स्कूल के समस्त कर्मचारी एवं बच्चे।



बोकारो। जिला एवं सत्र न्यायाधीश गौतम कुमार चौधरी को 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.कुसुम बहन।



वनूड, चंडीगढ़। पुलिस अधीक्षक गुरजीत सिंह को 'रक्षा-सूत्र' बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.सविता बहन।



मेरठ। फिल्म अभिनेत्री दीप्ति भटनागर को 'परमात्मा का परिचय' देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.मनीषा बहन।

संत वह जिसके.....

पृष्ठ 2 का शेष

करेंगे? इतनी ज्यादा कीमत देकर अप यह फूल किसको देने वाले हैं?

राजा ने कहा - आपको पता नहीं है? अपनी राजधानी में बुद्ध का आगमन हो रहा है। इसलिए हम वहां जा रहे हैं। उनके दर्शन का समय है। आपको ख्याल नहीं है गरीब आदमी, मुझे तो लगता है कि उनके आगमन से ही यह बे-मौसमी फूल खिला है। उनके प्रभाव का ही यह परिणाम है। जो फूल भी उनके आगमन से बे-मौसम खिल सकता है तो उनके दर्शन से मनुष्य के हृदय क्यों नहीं खिल सकता?

फूल तो मुझे कोई भी कीमत में और कोई भी हालत में मुझे चाहिए ही। और यह फूल मैं बुद्ध के चरणों में समर्पित करना चाहता हूँ? कोई भी कीमत मांग ले। लोग तो मौसमी कमल का फूल सदा उनको चढ़ाते ही हैं लेकिन यह बे-मौसम खिला हुआ कमल का फूल चढ़ाने का सौभाग्य आज मुझे मिला है।

गरीब व्यक्ति चमार था। एकदम गरीब और बिल्कुल अनपढ़। लेकिन उनकी समझ बिल्कुल कम नहीं थी। सम्राट भी उन्हें खरीद नहीं सकता उतनी ऊंच अमीरी उनके अंतर हृदय में थी। पैसा और परमात्मा के बीच का अंतर वह बखुबी जानता था। पंडिताई उनके पास न थी लेकिन प्रज्ञा अवश्य होगी। सात पीढ़ी तक दरिद्रता खत्म हो जाये इतना धन मिल रहा था फिर भी फूल बेचने को तैयार नहीं हुआ। उसने राजा के चरण में झुककर नमन कर विनती की कि - हे प्रभु! मुझे माफ कर दीजिए। आप सम्राट है। अन्नदाता और हमारे पालनहार हैं। आपको ना कहना छोटे मुंह बड़ी बात होगी। लेकिन अब तो मैं यह फूल कोई भी कीमत में देने को तैयार नहीं हूँ। मैं गरीब हूँ, गरीब ही रहूंगा परंतु जिस फूल को चढ़ाने के लिए आप कोई भी कीमत देने को तैयार हैं उसी चरण में यह फूल मैं खुद ही चढ़ाऊंगा। मेरे ख्याल में अब यह फूल का नहीं वे चरण का मूल्य है। मैं भी ऐसा विचित्र आदमी हूँ। फूल बेचने निकला। नगर में भगवान का आगमन हुआ है तो यह फूल मैं खुद जाकर चढ़ाऊंगा। यह फूल अब मुझसे बेचा नहीं जा सकता। उनके प्रभाव का ही यह परिणाम है। अब फूल के साथ मेरा हृदय भी उनके चरणों में सौंप दूंगा।

पैसा से ज्यादा परमात्मा आपके लिए ज्यादा मूल्यवान बन जाता है तब क्रांति की पल बन जाती है। वह पल (समय) का सद उपयोग कर सके तो आप मांगे उनसे भी अनेक गुणा मिलता है। बुद्ध उस गरीब आदमी के समर्पण अवश्य ही जान गये होंगे। और उनके हृदय कमल खिल जाये इतना शुभ आशीर्वाद भी बरसाया होगा। संत को जीवन ऐसे भी सर्व सृष्टि के लिए शुभाशीष जैसा ही होता है उनके अस्तित्व में से शुभ आशीर्वाद की वर्षा निरंतर चालू ही रहती है। जिसका अंतरमन उनके आशीर्वाद प्राप्त कर लेता वे धन्य हो जाते हैं।

प्रभु-मिलन के.....

पृष्ठ 3 का शेष

इन्होंने वरदानों से झोली कैसे भरी। जो वत्स परमात्मा के आज्ञाकारी बनें, जिन्होंने अपने श्रेष्ठ कर्मों से प्रभु के दिल को जीता और जिन्होंने सम्पूर्ण पवित्र बनकर एकाग्रता से योगाभ्यास किया - ऐसी तपस्वी रूहों को भगवान ने 'वरदानी भव' का वरदान दिया। किसी को 'विघ्न-विनाशक' का किसी को 'सफलता' का, किसी को वाचा की सिद्धि का, किसी को संकल्प की सिद्धि का तो किसी को 'शक्ति भव' का वरदान दिया।

इसी प्रकार परमात्मा से अनेकों को दिव्य दृष्टि का वरदान प्राप्त हुआ और वे ध्यान अवस्था में विभिन्न साक्षात्कार कर सकीं और दिव्य अनुभव पा सकीं।

भगवान से वार्तालाप का आनन्द मिला - तपस्वी तो केवल भगवान की कोई दिव्य वाणी सुनने को ही अपना परम सौभाग्य मानते हैं। परन्तु इन परम सौभाग्यशाली आत्माओं ने तो 75 वर्ष प्रतिदिन भगवान से वार्तालाप करने का आनन्द प्राप्त किया। किसी महान आत्मा से बात करके भी मनुष्य कितना गौरान्वित होता है, तो भला भगवान से रूहरिहान करके रूह कितनी आनन्दित होती होगी। इस लम्बे काल की ईश्वरीय पालना में पलने वाली आत्माओं के भाग्य को कथन करना संभव नहीं।

अब सोचो कितनी महान हैं ये आत्माएं। यह सत्य है कि शीघ्र ही भविष्य में इनके दर्शनों के लिए भी विश्व उमड़ पड़ेगा। समस्त विश्व के सभी कट्टर पंथियों को अपनी कट्टरता त्याग कर सत्य पथ को स्वीकार करना ही पड़ेगा। तो सभी को चाहिए कि इस सत्य में यदि संदेह हो तो स्वयं भी समीप आकर अपने अनुभवों द्वारा इस सत्य को पहचानें।

परिस्थिति के वश होकर न सोचें

प्रश्न:- लेकिन हमारा अपना विचार सही तो होता है!

उत्तर:- यह ठीक है आप अपनी जगह सही भी हैं। आप बस बैठें हैं और यहां आपका माइंड लगातार उन थॉट्स को क्रियेट कर रहा है जो कि आपके कंट्रोल में है ही नहीं। तो क्या इसे आप अपनी क्षमता का सदुपयोग कहेंगे...? नहीं।

प्रश्न:- ये तो हो ही नहीं सकता!

उत्तर:- यह तो हताशा है। जो स्टिलनेस थी वो अब बहना शुरू हो जाता है। क्योंकि आप एक-एक वो थॉट क्रियेट कर रहे हैं जो आपके कंट्रोल में नहीं है।

प्रश्न:- वास्तव में इससे तो मुझे और उसकी आदत पड़ती जायेगी!

उत्तर:- यही चीज तो फिर व्यावहारिक जीवन में आयेगी ना! ये बिल्कुल वही चीज फिर रोज के ड्रामा में होती है। जो टेलीविजन के ड्रामा के साथ पहले प्रैक्टिस होती है, फिर वही चीज आदत बन जाती है, फिर वही चीज हमारे प्रतिदिन के जीवन में आती है। इसकी तीन अवस्था होती है पहले स्टिलनेस, फिर जजमेंटल और तीसरा तो उसमें पूरी तरह से इन्वॉल्व हो जाना। और जब हम पूरी तरह से उसमें इन्वॉल्व हो जाते हैं तब अपनी थॉट क्रियेट करने की जो मेरी क्षमता है, उसे तो मैं भूल ही जाती हूँ। मुझे क्या सोचना है माना कि मैं अपने सोचने की शक्ति भी उस प्रोग्राम को दे देती हूँ। ऐसा इसलिए है कि मैं वह हर रोज करती हूँ। ऐसा नहीं कि मैं मूवी को एक बार ही देखती हूँ। मैं कभी-कभी टी.वी. देख रही हूँ ऐसा नहीं है। जब हम कोई भी चीज रोज करेंगे तो वह मेरी आदत बन जाती है। अब जो हमने पिछली बार भी देखा कि गुस्सा अगर सिर्फ ऑफिस में ही कर रहे हैं ये सोचकर कि गुस्से से काम होता है लेकिन अगर गुस्सा करने की मेरी आदत बन जाती है तो वो मेरे साथ हर जगह जायेगी। जब हमने प्रोग्राम शुरू किया था बैठकर देखना तो मैं एक डिटैच ऑब्जर्वर थी लेकिन आधे पौने घण्टे के अंदर-अंदर मैं उस ड्रामा में पूरी तरह से इन्वॉल्व हो जाती हूँ। अब



यही चीज, फिर सारा दिन होती है, क्योंकि अब मुझे उसकी आदत पड़ गयी है। अब धीरे-धीरे तो वो डिटैच कैसे होना है आज हमें वही पता नहीं चलता है और इसलिए आज हमारी भाषा ये हो गयी है कि किसी से लगाव होना तो स्वाभाविक है। डिटैचमेंट की विचारधारा कम्फर्टेबल नहीं लगती है। लोगों को बहुत खराब लगता है कि हम बहुत स्टिल हैं, हम बहुत डिटैच हैं, हमारे ऊपर इसका प्रभाव क्यों नहीं पड़ रहा। लेकिन ये जो प्रभाव पड़ने की आदत है वो मन से पड़ती है।

प्रश्न:- जब मुम्बई में आतंकवादियों का हमला हुआ था तब वही समाचार लगातार दो दिनों तक चलता रहा और हम पूरा समय परेशान रहे!

उत्तर:- अगर आप न्यूज में देखो कि यदि कहीं कोई एक्सीडेंट हुआ है। तो ये देखकर अच्छा तो नहीं लगता, लेकिन जब हम उसको 24 घंटा हर रोज विस्तार करके दिखाते हैं। और उसमें हम करते क्या हैं? किसी के साथ कुछ हुआ, हम उसी को लेकर रोते हुए को बार-बार दिखायेंगे, बार-बार उसको पूछेंगे कि आपको कैसा फील हो रहा है? माना लोग उनकी भावनाओं और उनकी फीलिंग को मार्केट में बेचते हैं। क्योंकि हम ये फील करते हैं कि लोग इसे देखना चाहते हैं। यह सच है!

हमें लगता है कि ये रहम है। वास्तव में यह रहम नहीं है। उनको रहम नहीं चाहिए उनको कृपा चाहिए, उनको प्यार चाहिए। लेकिन कुछ भी ऐसा देखकर अगर हमने भी दुःख-दर्द क्रियेट किया तो वो प्यार नहीं है। जब ये आतंकवादी हमला हुआ तो इसकी खबर चारों ओर तेजी से फैल गयी कि इस बात को लेकर तो आप सबको गुस्सा होना चाहिए। आप क्यों नहीं गुस्सा हो रहे हैं जबकि सारे लोग गुस्सा हो रहे हैं। इसका तो यही समाधान है। गुस्सा का समाधान, क्या गुस्सा ही है! जिन्होंने जो किया सो किया। यह गुस्से की पराकाष्ठा के लक्षण है। ऑलरेडी उस शहर के अंदर जो वातावरण फैल चुका था वो दर्द का था, बहुत से लोगों का जीवन ऊपर-नीचे हो गया था, बहुत से लोग डर में थे, अपने-अपने घरों में बंद थे। जहां वातावरण के अंदर ऑलरेडी इतना दुःख-दर्द है, वहां हम लोगों को और ही गुस्सा दिलाने की कोशिश कर रहे हैं। (क्रमशः)